



SHRI SRIBHASHYAM VIJAYASARATHI

Shri Sribhashyam Vijayasarathi is a Sanskrit scholar, poet, writer, grammarian, philosopher and critic. He with his profound intellect is known as a poet for his mellifluous, sweet, exquisite and elegant poetry.

2. Born on 10th March, 1936 at Chegurthi village, Karimnagar district, Telangana, Shri Vijayasarathi received his Bachelor of Oriental Language degree from Osmania University and Shiksha Shastry from Rashtriya Sanskrit Vidyapeeth, Tirupathi. Later, he worked as a Sanskrit lecturer at Sri Vishveswara Sanskritaandhra College, Warangal, Telangana.

3. Shri Vijayasarathi has to his credit nearly 100 books (in Sanskrit and Telugu) like Mandakini, Bharathabharathi, Raasakeli, Praveena Bharatham, Vishadalahari, Sangeetha Madhavam, Prahelikas and a comparative study of Vasu Charithra. He has left no genre untouched in Sanskrit. He is instrumental in writing about the history and culture of India in lucid Sanskrit. He is a spiritual humanist and a progressive writer. He has been rendering yeoman service in spreading the Sanskrit language by conducting free Sanskrit classes, organizing Vidwat sabhas, poetic symposia and publishing booklets on different issues of Dharma Shastras and Itihasas. Though he had his schooling in Urdu medium, he excelled himself as a Sanskrit scholar.

4. Shri Vijayasarathi established Sarvavadikika Samsthanam in 1980 at Karimnagar. This Samsthanam, in addition to spreading Vedic knowledge, serving Sanskrit language, setting up Aarsha Dhama also takes the responsibility of maintaining the Yagnavaraha Kshetram temple which was established by Shri Vijayasarathi in the year 1986. Sarvavaidika Samsthanam takes up Vedic activities meant for the well-being of the society.

5. Shri Vijayasarathi is the recipient of numerous awards and honours including Mahakavi title by the then Speaker of Andhra Pradesh, Shri Ayyadevara Kaleshwara Rao; Vachaspathi Puraskar by K. K. Birla Foundation in 1996 at Jaipur; Indira Behere gold medal from Tilak Maharashtra Vidyapeeth, Pune; accorded 'Mahamahopadhyaya' Title by Rashtreeya Sanskrit Vidyapeeth, Tirupathi in 2018; "Vishishta Sahitya Puraskaram" the State highest literary award by Government of Telangana in 2017; Best Sanskrit scholar award from Telugu University, Hyderabad; State level Pratibha Puraskar by Pragna Bharathi and Itihaasa Sankalana Samithi in 2019 etc.





श्री श्रीभाष्यं विजयसारथि

श्री श्रीभाष्यं विजयसारथि संस्कृत के विद्वान, कवि, लेखक, व्याकरणविद, दार्शनिक और आलोचक हैं। वह अपने गहन प्रबुद्धता, पूर्ण सौम्य, मधुर, सुरुचिपूर्ण और गरिमामयी काव्य सृजन के लिए जाने जाते हैं।

2. 10 मार्च, 1936 को करीमनगर जिले, तेलंगाना के चेगुर्थी गाँव में जन्मे, श्री विजयसारथि ने उस्मानिया विश्वविद्यालय से बैचलर ऑफ ओरिएंटल लैंग्वेज की डिग्री और राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति से शिक्षा शास्त्री की उपाधि प्राप्त की। बाद में, उन्होंने श्री विश्वेश्वर संस्कृत आंध्र कॉलेज, वारंगल, तेलंगाना में संस्कृत व्याख्याता के रूप में काम किया।

3. श्री विजयसारथि ने मंदाकिनी, भारतभारती, रासकेली, प्रवीण भारतम, विशालाधरी, संगीता माधवम, प्रहेलिका और वसु चरित्र के तुलनात्मक अध्ययन जैसी लगभग 100 पुस्तकों (संस्कृत और तेलुगु में) की रचना की है। उन्होंने संस्कृत की कोई शैली नहीं छोड़ी है। भारत के इतिहास और संस्कृति के बारे में लिखते समय वह सरल संस्कृत का प्रयोग करते हैं। वह एक आध्यात्मिक मानवतावादी और प्रगतिशील लेखक हैं। वह धर्म शास्त्रों और इतिहास के विभिन्न विषयों पर निःशुल्क संस्कृत कक्षाओं के संचालन, विद्वत सभाओं, काव्यात्मक संगोष्ठी के आयोजन और पुस्तिकाओं के प्रकाशन द्वारा संस्कृत भाषा के प्रचार–प्रसार में निरूस्वार्थ भाव से लगे हुए हैं। यद्यपि उनकी स्कूली शिक्षा उर्दू माध्यम में हुई है, परंतु उन्होंने स्वयं को संस्कृत के उत्कृष्ट विद्वान के रूप में स्थापित किया।

4. श्री विजयसारथि ने 1980 में करीमनगर में सर्ववेदिकिका संस्थानम की स्थापना की। यह संस्थान, वैदिक ज्ञान के प्रसार के अलावा, संस्कृत भाषा की सेवा, आर्श धाम की स्थापना करने के साथ–साथ वर्ष 1986 में उनके द्वारा स्थापित याज्ञवराह क्षेत्रम मंदिर के रखरखाव का दायित्व भी निभाता है। सर्ववेदिकिका संस्थानम ने समाज की बेहतरी के लिए वैदिक गतिविधियां आरंभ की हैं।

5. श्री विजयसारथि को आंध्र प्रदेश के तत्कालीन अध्यक्ष श्री अय्यदेवरा कलेश्वर राव द्वारा महाकवि की उपाधि सहित कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। उन्हें 1996 में जयपुर में के.के. बिरला फाउंडेशन द्वारा वाचस्पति पुरस्कार; तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे से इंदिरा बीहर स्वर्ण पदक; 2018 में राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति द्वारा 'महामहोपाध्याय' की उपाधि; 2017 में तेलंगाना सरकार द्वारा राज्य का सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार ''विशिष्ट साहित्य पुरस्कार''; तेलुगु विश्वविद्यालय, हैदराबाद से सर्वश्रेष्ठ संस्कृत विद्वान का पुरस्कार; 2019 में प्रज्ञा भारती और इतिहास संकलन समिति द्वारा राज्य स्तरीय प्रतिभा पुरस्कार आदि आदि प्राप्त हुए हैं।